Naraziyon Ka Ilaaj (Hindi) सफ़ह़ात 29

नाराज़ियों का इ़लाज

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नाराज़ियों का इलाज

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 27 सफ़ह़ात का रिसाला : "**नाराज़ियों का इलाज**" पढ़ या सुन ले उसे दुन्या व आख़िरत के रन्जो ग़म से बचा और दोनों जहां की खुशियां नसीब फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "**अल्लाह** पाक की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और मुसाफ़ह़ा करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएं।"

(مُسْنَدِ اَبو یَعْلٰی ج٣ ص٩٥ حديث ٢٩٥١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन की सुल्ह़ का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे पता चला कि ह़ज़राते इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के दरमियान कोई नाराज़ी हो गई है तो मैं ने नवासए रसूल ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से अ़र्ज़ की : लोग आप दोनों साह़िबान को अपना पेश्वा (या'नी सरदार) मानते हैं। आप अपने भाईजान ह़ज़रते इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के पास जा कर उन से

www.dawateislami.net

सुल्ह़ कर लीजिये क्यूं कि आप उन से उ़म्र में छोटे हैं। इस पर ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान न सुना होता कि "**(सुल्ह़ में) पहल करने वाला जन्नत में भी पहले जाएगा**"(1) तो मैं ज़रूर उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता मगर मैं येह पसन्द नहीं करता कि उन से पहले जन्नत में जाऊं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रत इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवा और उन्हें सारा वाक़िआ़ बताया तो नवासए रसूल ह़ज़रत इमामे ह़सन رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने फ़रमाया : صَدَقَ اَخِی या'नी "मेरे भाई ने सच कहा" फिर आप खड़े हुए और अपने भाई ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ عَنْہ के पास आ कर उन से सुल्ह़ कर ली। (ذخائر العقبیٰ ص ۲۳۸ سے خلاصہ)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सदक़ा ह़सन हुसैन का या रब्बे मुस्त़फ़ा
कर दे मुआ़फ़ हर ख़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى محمَّد

जन्नत की त़रफ़ पहल करने का नुस्ख़ा

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! इस ईमान अफ़्रोज़ वाक़िए से दर्स मिला कि अगर किसी से नाराज़ी हो भी जाए तो हमें दिल मज़बूत कर के सुल्ह़ करने के लिये पहले आगे बढ़ जाना चाहिये, मेरे आक़ा आ'ला

(۱) : الزهد ص ۲۰۳ حديث ۷۲٦ ۔

ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा आपस में नाराज़ दो भाइयों को सुल्ह़ कर लेने की तरग़ीब देते हुए फ़रमाया : "आप दोनों में से जो मिलने (या'नी सुल्ह़ करने) में पहल करेगा वोह जन्नत की त़रफ़ पहल करेगा।" (ह़यातेआ'ला ह़ज़रत, जि. 1, स. 358 से ख़ुलासा)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

शैत़ान आपस में लड़वाता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! शैत़ान मरदूद मुसल्मानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारत गरी करवाता है नीज़ इन्हें **सुल्ह़** (PEACE) पर आमादा ही नहीं होने देता। बल्कि ऐसा भी होता है कि कोई नेक दिल शख़्स बीच में पड़ कर उन में **सुल्ह़** करवा भी दे तब भी त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाल कर उन्हें उक्साता और भड़काता है। शैत़ाने मक्कार के वार से ख़बरदार करते हुए पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** की 53वीं आयत में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक शैत़ान लोगों के दरमियान फ़साद डालता है।

अल्लाह पाक पारह 7 **सूरतुल माइदह** आयत 91 में फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : शैत़ान तो येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ो कीना डाल दे।

सब सुल्ह़ो सफ़ाई के साथ रहें

जिन घरों में आपसी नाराज़ियों का सिल्सिला हो, मां बेटी, बाप बेटे, भाई बहन, सास बहू, नन्द भावज और दीगर रिश्तेदारों में आपस के अन्दर नाराज़ियां हों, पड़ोसियों के साथ अनबन हो, दोस्तों में लड़ाई ठन गई हो, ख़ानदान व क़बीले आपस में टकरा गए हों, बाज़ार में जो दुकानदार आपस में एक दूसरे की काट में मसरूफ़ हों उन सब मुसल्मानों को **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये पक्की सुल्ह़ कर के मिलजुल कर शैत़ान के फूट डलवाने वाले तबाहकार वार को बेकार बना देना चाहिये, यक़ीनन आपस के फ़सादात में दुन्या व आख़िरत के बे शुमार नुक़्सानात हैं। जो आ़शिक़ाने रसूल आख़िर तक येह रिसाला पढ़ या सुन लेंगे तो اِنْ شَآءَ الله आपसी नाराज़ियों से बचने और मुआ़फ़ी व दर गुज़र से काम लेने का ज़ेह्न बन जाएगा।

ग़ुस्सा फ़साद की जड़ है

बात बात पर जज़्बात में आ जाने वाला ग़ुसीला (या'नी ग़ुस्से वाला) शख़्स अक्सर फ़सादात का बाइ़स बन जाता है, ग़ुस्से वालों को ख़बरदार हो जाना चाहिये कि नफ़्स के सबब आने वाले ग़ुस्से में बेक़ाबू हो कर **अल्लाह** करीम की ना फ़रमानी वाला काम कर के कहीं जहन्नम के गहरे गढ़े में न जा पड़ें।

ग़ुस्से की ता'रीफ़ (DEFINITION)

ग़ज़ब या'नी "ग़ुस्से" के मा'ना हैं : ثَوَرَانُ دَمِ الْقَلْبِ اِرَادَةَ الْاِنْتِقَام। या'नी "बदला लेने के इरादे के सबब दिल के ख़ून का जोश मारना।" (المفردات ص٦٠٨) ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ग़ज़ब

या'नी **ग़ुस्सा** नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) करने पर उभारे।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 655)

जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जहन्नम का एक दरवाज़ा है, जिस से वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का **ग़ुस्सा अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी के बा'द ही ठन्डा होता है।" (شعب الایمان ج٦ص٣٢٠حدیث٨٣٣١)

सुन लो ! नुक़्सान ही होता है बिल आख़िर उन को
नफ़्स के वासिते "ग़ुस्सा" जो किया करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 294)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मालिक बिन दीनार के ग़ुस्सा पी जाने की बरकत (वाक़िआ़)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मकान किराए (या'नी रेन्ट, Rent) पर लिया। उस मकान से बिल्कुल मिला हुवा एक यहूदी का मकान था। वोह यहूदी दुश्मनी की बुन्याद पर "परनाले" (या'नी छत का पानी बाहर गिराने की मोरी) के ज़रीए गन्दा पानी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुबारक मकान में डालता रहता। मगर आप ख़ामोश ही रहते। आख़िर कार एक दिन उस ने ख़ुद ही आ कर अ़र्ज़ की : जनाब ! मेरे परनाले से गिरने वाली गन्दगी की वज्ह से आप को कोई शिकायत तो नहीं ? आप ने बड़ी नरमी के साथ फ़रमाया : "परनाले से जो गन्दगी गिरती है उस को झाड़ू दे कर धो डालता हूं।" उस ने कहा : आप को इतनी तक्लीफ़ होने के बा वुजूद **ग़ुस्सा** नहीं

आता ? फ़रमाया : आता तो है, मगर पी जाता हूं क्यूं कि (क़ुरआने करीम के पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत 134 में) ख़ुदाए रह़मान का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले हैं और **अल्लाह** नेक लोगों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

जवाब सुन कर वोह यहूदी मुसल्मान हो गया। (تذکرۃ الاولیاء ص٤٥)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी

बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ुस्से से बुग़्ज़ो कीना पैदा होता है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! नरमी की कैसी बरकतें हैं ! नरमी से मुतअस्सिर हो कर वोह यहूदी मुसल्मान हो गया। ग़ुस्से की तबाह कारियों में से येह भी है कि इस से बुग़्ज़ो कीना (या'नी अ़दावत व दुश्मनी) पैदा होता है जिस से बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक भी नौबत पहुंच जाती है।

कीने की ता'रीफ़ (DEFINITION)

اَلْحِقْدُ : اَنْ يُّلْزِمَ نَفْسَهُ اسْتِثْقَالَ اَحَدٍ وَّ النِّفَارَ عَنْهُ ، وَ الْبُغْضَ لَهٗ وَ اِرَادَةَ الشَّرِّ

या'नी "किसी शख़्स के ख़िलाफ़ दिल में नफ़्रत, ना गवारी और दुश्मनी व बुग़्ज़ रखना और उस का बुरा चाहना कीना कहलाता है।" (الحدیقۃ الندیۃ ج٣ ص٧٨)

कीना व अ़दावत की तबाह कारियां पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़िये :

मग़्फ़िरत में रुकावट

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि **सरकारे** दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "लोगों के आ'माल हर हफ़्ते में दो बार पेश किये जाते हैं या'नी पीर और जुमे'रात के दिन, फिर अ़दावत रखने वाले दो भाइयों के इलावा हर मोमिन को बख़्श दिया जाता है और कहा जाता है : इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि मिल जाएं ।"

(مسلم ص١٣٨٨ حديث ٢٥٦٥)

अ़दावत रखने वाले की शामत

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि नबियों के सरदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "शा'बान की पन्दरहवीं शब में **अल्लाह** पाक अपने बन्दों को रह़मत की नज़र से देखता और सब को बख़्श देता है लेकिन मुश्रिक व अ़दावत रखने वाला नहीं बख़्शा जाता ।"

(ابن ماجه ج٢ ص١٦١ حديث ١٣٩٠)

बिला वज्हे शर्ई क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ गुनाह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! हुक्मे शरीअ़त के बग़ैर फ़क़त़ ज़ाती नाराज़ी की वज्ह से मुसल्मानों का एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ात ख़त़्म कर देना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "मुसल्मान से बिला वज्हे शर्ई कीना व बुग़्ज़ रखना ह़राम है और बिला मस्लह़ते

शर्इ़य्या तीन दिन से ज़ियादा तर्के सलामो कलाम (या'नी सलाम व बातचीत छोड़ देना) भी ह़राम है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 6, स. 526) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** करीम के प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई को तीन दिन से ज़ियादा छोड़े, जिस ने तीन दिन से ज़ियादा छोड़ा और मर गया **तो जहन्नम में दाख़िल हुवा।**" (ابو داوٗد ج٤ ص ٣٦٤ حديث ٤٩١٤)

तीन क़िस्म के अफ़राद

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا कहते हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन क़िस्म के अफ़राद की नमाज़ें उन के सर से एक बालिश्त भी नहीं उठतीं ﴾1﴿ क़ौम का वोह इमाम जिसे लोग पसन्द नहीं करते ﴾2﴿ वोह औ़रत जिस ने इस ह़ालत में रात गुज़ारी कि उस का शौहर नाराज़ हो ﴾3﴿ वोह दो भाई जो (शरीअ़त की इजाज़त के बग़ैर) आपस में नाराज़ हैं।" (اِبن ماجه ج١ص٥١٦حديث٩٧١)

ऐ़ब छुपाने की फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! बिला इजाज़ते शर्इ़ आपस की नाराज़ी के बाइ़स उ़मूमन दोनों त़रफ़ के अफ़राद के माबैन (या'नी आपस में) बद गुमानियों, ग़ीबतों, चुग़्लियों और तोह्मतों वग़ैरा जैसे जहन्नम में पहुंचाने वाले गुनाहों का सिल्सिला रहता है। आपस की नाराज़ियों के बाइ़स एक दूसरे के **ऐ़ब उछालने** का गुनाह भी बहुत किया जाता है लिहाज़ा सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है। अगर किसी मुसल्मान का ऐ़ब मा'लूम हो जाए तो उसे छुपा देना ज़रूरी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुसल्मान के **ऐ़ब** छुपाने में बड़ा

सवाब मिलता है जैसा कि ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी का **पोशीदा** (या'नी छुपा हुवा) **ऐ़ब** देख कर छुपाया तो येह ऐसा है गोया उस ने ज़िन्दा दफ़्न की हुई बच्ची को ज़िन्दा किया।" (معجم اوسط ج٦ ص٩٧ حدیث ٨١٣٣)

ऐ़ब की वज़ाह़त !

ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस ह़दीसे पाक की जो वज़ाह़त फ़रमाई है उस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : ❁ वोह ऐ़ब जो किसी मुसल्मान के ह़क़ से मुतअ़ल्लिक़ न हो और येह शख़्स उसे लोगों से छुपाना चाहता हो, बा'ज़ शारिह़ीन (या'नी ह़दीसों की शर्ह़ करने वाले उ़लमा) ने फ़रमाया कि इस से मुराद मुसल्मान मर्द या औ़रत का सत्र है या'नी किसी को नंगा देखे तो उसे कपड़ा पहना दे, हो सकता है कि दोनों ही मुराद हों ❁ इस त़रह़ कि (किसी का ऐ़ब देख कर) ख़ुद उस से कह दे कि देख ! आइन्दा ऐसी ह़रकत न करना वरना फिर तेरी ख़ैर न होगी और लोगों से (उस का ऐ़ब) छुपा ले ताकि तब्लीग़ भी हो जाए और मुसल्मान की पर्दापोशी भी लेकिन अगर येह शख़्स किसी (के) क़त्ल या (किसी को) नुक़्सान (पहुंचाने) की ख़ुफ़्या साज़िश कर रहा है तो ज़रूर इस की इत्तिलाअ़ उस (या'नी जिसे येह नुक़्सान पहुंचाना चाहता है) को कर दे ताकि वोह नुक़्सान से बच जावे या अगर येह शख़्स आ़दी मुजरिम बन चुका है तो इस का ए'लान कर दे। लिहाज़ा इस फ़रमाने आ़ली का येह मक़्सद नहीं कि ख़ुफ़्या चोर, क़ातिल के जुर्म छुपाओ, ह़ुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का फ़रमान निहायत ही जामेअ़ होता है ❁ या'नी इस पर्दापोशी (या'नी ऐ़ब

छुपाने) का सवाब ऐसा है जैसे किसी ज़िन्दा दफ़्न शुदा बच्ची को क़ब्र से निकाल कर उस की जान बचा लेना क्यूं कि मुसल्मान की आबरू (या'नी इ़ज़्ज़त) उस की जान की त़रह़ क़ाबिले एह़तिराम है। बहर ह़ाल मुसल्मान की जाती हुई इ़ज़्ज़त बचाना बड़ा ही सवाब है मगर वोह कुयूद (या'नी वज़ाह़तें) ख़याल में रहें जो हम ने अ़र्ज़ कीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 570)

मुसल्मान कैसा होना चाहिये ?

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यारो मददगार छोड़ता है। और जो अपने भाई की ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) पूरी करे, **अल्लाह** पाक उस की ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) पूरी करता है। और जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे, **अल्लाह** पाक क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा। और जो किसी मुसल्मान की **ऐ़बपोशी** करे (या'नी ऐ़ब छुपाए) तो **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस की **ऐ़बपोशी** फ़रमाए (या'नी ऐ़ब छुपाए)गा।"

(مُسلِم ص١٣٩٤ حدیث٦٥٨٠)

ऐ़ब छुपाओ, जन्नत पाओ

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ عَنْه बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक के सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो शख़्स अपने भाई का ऐ़ब देख कर उस की **पर्दापोशी** कर दे (या'नी छुपा दे) तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।"

(مُسند عَبد بن حُمَيد ص٢٧٩ حدیث٨٨٥)

जब लड़ाई ठन जाती है

आपस की नाराज़ी के बाइ़स बसा अवक़ात एक दूसरे की ब कसरत **ग़ीबत** की जाती है। **ग़ीबत** गुनाहे कबीरा, ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जब दिलों में नाराज़ी असर जमाती और आपस में लड़ाई ठन जाती है तो कभी **ग़ीबतों और तोह्मतों** का सैलाब उमड आता और ग़ीबत करने सुनने वालों को सूए जहन्नम हंकाता है। इस सिल्सिले में सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो इर्शादात सुनिये और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िये :

﴾1﴿ ग़ीबत का अ़ज़ाब

मैं शबे मे'राज ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाख़ुनों से छील रहे थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल ! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : "येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी उन की ग़ीबत करते) और उन की इ़ज़्ज़त ख़राब करते थे।" (ابوداؤد ج٤ ص٣٥٣ حديث٤٨٧٨)

ग़ीबत की ता'रीफ़ (DEFINITION)

किसी (ज़िन्दा या मुर्दा) शख़्स के पोशीदा (या'नी छुपे हुए) ऐ़ब को (जिस को वोह दूसरों के सामने ज़ाहिर होना पसन्द न करता हो) उस की बुराई करने के त़ौर पर ज़िक्र करना। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 532)

﴾2﴿ तोहमत का अ़ज़ाब

"**जो** शख़्स किसी मुसल्मान पर "बोहतान" (या'नी तोहमत) लगाए (या'नी ऐसी चीज़ कहे जो उस में नहीं) तो **अल्लाह** पाक उसे रद्ग़तुल ख़बाल में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए।" (اَبوداؤد ج٣ ص٤٢٧ حديث٣٥٩٧) (रद्ग़तुल ख़बाल जहन्नम में एक मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होगा)

बयान की हुई ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से : "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" का मत़लब बयान करते हुए ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी उस गुनाह से तौबा के ज़रीए़ निकल जाए, या जिस अ़ज़ाब का वोह ह़क़दार हो चुका है उसे भुगत्ने के बा'द (तोहमत के गुनाह से) पाक हो जाए। (اشعۃُ اللّمعات ج۳ص۲۹۰)

बद दुआ़ देना इन्तिक़ाम है

याद रखिये ! अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले के ह़क़ में बद दुआ़ कर देना इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेना) है, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने ज़ालिम पर बद दुआ़ की उस ने अपना बदला ले लिया।" (تِرمذی ج۵ص۳۲٤حدیث۳۵٦۳)

झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत

अपने नफ़्स की ख़ातिर झगड़ने से मुसल्मान को बचना चाहिये ह़त्ता कि कोई दिल आज़ारी कर बैठे तब भी बह़सो तक्रार से बच कर दर गुज़र से काम लेते हुए झगड़े से दूर रहने ही में भलाई है। **फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं।"

(ابوداؤد ج٤ص۳۳۲ حدیث ٤۸۰۰)

मुसल्मान किसे कहते हैं ?

मुसल्मानों को आपस में झगड़ने से क्या वासित़ा ! येह तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ होते हैं चुनान्चे **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : (पूरा) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे

और (कामिल या'नी पूरा) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से **अल्लाह** पाक ने मन्अ़ फ़रमाया है। (بُخاری ج۱ ص۱۵ حدیث ۱۰)

इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "**कामिल** (या'नी पूरा) **मुसल्मान** वोह है जो लुग़तन शर्अ़न (या'नी लुग़वी व शर्ई ए'तिबार से) हर त़रह़ मुसल्मान हो वोह मोमिन है जो किसी मुसल्मान की ग़ीबत न करे, गाली, त़ा'ना, चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ तह़रीर करे।" मज़ीद फ़रमाते हैं कि "**कामिल मुहाजिर** वोह मुसल्मान है जो तर्के वत़न के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लुग़तन (या'नी लुग़वी मा'ना के लिह़ाज़ से) हिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 29)

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसल्मान की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से उसे तक्लीफ़ पहुंचे। (اَلزُّهد لِابن المُبارَك ص۲٤۰حدیث ٦٨٩) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे। (ابوداؤد ج٤ ص۳۹۱حدیث٥۰۰٤)

ईज़ाए मुस्लिम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद का मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है, मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौरदौरा है, अ़वाम तो अ़वाम बा'ज़ अवक़ात ख़ास नज़र आने वाले भी इस की त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं, ग़ुस्से के (बे जा इज़्हार) का मरज़ आ़म है, ग़ुस्से की वज्ह से अक्सर

ख़वास (या'नी ख़ास साहिबान) भी लोगों की **दिल आज़ारी** कर बैठते हैं और इस गुनाह की त़रफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती। यक़ीनन किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर्ई दिल आज़ारी कबीरा गुनाह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِىْ، وَمَنْ اٰذَانِىْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰهَ'' या'नी जिस ने (बिला वज्हे शर्ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** पाक को ईज़ा दी। (معجم اوسط ج۲ ص۳۸۷ حدیث ۳۶۰۷)

अल्लाह पाक व रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देना कुफ़्फ़ार का बहुत ही बुरा त़रीक़ा है, **अल्लाह** करीम पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۵۷﴾

(پ۲۲،الاحزاب:۵۷)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जो **अल्लाह** और उस के रसूल को ईज़ा देते हैं उन पर दुन्या और आख़िरत में **अल्लाह** ने ला'नत फ़रमा दी है और **अल्लाह** ने उन के लिये रुस्वा कर देने वाला अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

बुरा चरचा करना बाइ़से अ़ज़ाब है

ख़ास कर मुबल्लिग़ और ख़ुसूसन बिल ख़ुसूस सुन्नी आ़लिम की किसी ख़ामी या ख़त़ा को किसी पर ज़ाहिर करना, लोगों में उस को आ़म करना नेकी की दा'वत और इस्लाम की तब्लीग़ के मुआ़मले में बहुत बुरा और दुन्या व आख़िरत के लिये सख़्त नुक़्सान देह है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : और अहले सुन्नत से ब तक़्दीरे इलाही जो ऐसी लग़्ज़िशे फ़ाह़िश (या'नी सख़्त भूल) वाक़ेअ़ हो उस का इख़्फ़ा (छुपाना) वाजिब है कि مَعَاذَاللهُ लोग उन से बद ए'तिक़ाद (या'नी बदज़न) होंगे तो जो नफ़्अ़ उन की तक़्रीर और तह़रीर से इस्लाम व सुन्नत को पहुंचता था उस में ख़लल वाक़ेअ़ होगा, इस की इशाअ़त (या'नी आ़म करना), इशाअ़ते फ़ाह़िशा (या'नी बुरा चरचा करना) है और इशाअ़ते फ़ाह़िशा (या'नी बुरा चरचा करना) ब नस्से क़ुरआने अ़ज़ीम ह़राम। قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** पाक फ़रमाता है) :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۙ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ (پ۱۸،النور:۱۹)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जो लोग चाहते हैं कि मुसल्मानों में बे ह़याई की बात फैले उन के लिये दुन्या और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है।

ख़ुसूसन जब कि वोह बन्दगाने ख़ुदा ह़क़ की त़रफ़ बे किसी उ़ज़्रो तअम्मुल के (या'नी ह़ीले बहानों के बग़ैर) रुजूअ़ फ़रमा चुके। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''مَنْ عَيَّرَ اَخَاهُ بِذَنْبٍ لَّمْ يَمُتْ حَتّٰى يَعْمَلَهٗ'' जिस ने अपने भाई को किसी गुनाह की वज्ह से आ़र दिलाया (या'नी शरमिन्दा किया) वोह मरने से क़ब्ल उसी गुनाह में मुब्तला होगा।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 594) [ترمذی ج٤ص٢٢٦حدیث٢٥١٣]

बा'ज़ लोग बहुत झगड़ालू त़बीअ़त के मालिक होते हैं, ख़्वाह म ख़्वाह तन्क़ीदें करते, बाल की खाल उतारते और बात बात पर फ़सादात

बरपा करते और मुसल्मानों के लिये ईज़ा का बाइस बनते रहते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि पारह 30 **सूरतुल बुरूज** की 10वीं आयते मुबारका में **अल्लाहु रब्बुल इ़बाद** का इर्शाद है :

اِنَّ الَّذِیْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ یَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِیْقِ ﴿۱۰﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक जिन्हों ने मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औ़रतों को आज़्माइश में मुब्तला किया फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिये आग का अ़ज़ाब है।

फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "फ़ितना सोया हुवा होता है उस पर **अल्लाह** पाक की ला'नत जो उस को बेदार करे।"

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر ص ۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵، تاریخ قزوین للرافعی ج ۱ ص ۲۹۱)

दुश्मन को दोस्त बनाने का कुरआनी नुस्ख़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह उसूल याद रखिये कि नजासत को नजासत से नहीं, पानी से पाक किया जाता है लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी भरा सुलूक करे तब भी आप उस के साथ मह़ब्बत भरे सुलूक की कोशिश फ़रमाइये اِنْ شَآءَ اللّٰه الْکَرِیْم इस के उ़म्दा नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा।

ख़ुदाए पाक की क़सम ! वोह लोग बड़े ख़ुश नसीब हैं जो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए ज़ुल्म करने वाले को मुआ़फ़ कर देते और बुराई को भलाई से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरग़ीब कुरआने

करीम में मौजूद है, चुनान्चे पारह 24 **सूरए** حٰمٓ السَّجْدَه की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बुराई को भलाई के साथ दूर कर दो तो तुम्हारे और जिस शख़्स के दरमियान दुश्मनी होगी वोह उस वक़्त ऐसा हो जाएगा कि जैसे वोह गहरा दोस्त है।

हुस्ने सुलूक का नतीजा

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** शरीफ़ में बुराई को भलाई से टालने का त़रीक़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : मसलन ग़ुस्से को सब्र से, जह्ल को ह़िल्म (या'नी जहालत को नरमी) से, बद सुलूकी को अ़फ़्व (व दर गुज़र) से कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तो मुआ़फ़ कर। (तो) इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की त़रह़ मह़ब्बत करने लगेंगे। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के ह़क़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद इन की शिद्दते अ़दावत (या'नी सख़्त दुश्मनी) के नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के साथ सुलूके नेक किया, इन की साह़िब ज़ादी (ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया। इस का नतीजा येह हुवा कि वोह **सादिकुल मह़ब्बत** या'नी सच्चे मह़ब्बत करने वाले जां निसार (सह़ाबी) हो गए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 884, التفسیر الوسیط للواحدی ج٤ ص٣٦)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

बुराई को भलाई से टालने की दो मिसालें

﴾1﴿ आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान

फ़त्हे मक्कए मुकर्रमा के मौक़अ़ पर वहां के सरदाराने क़ुरैश और आ़म लोग ह़रमे का'बा में जम्अ़ थे, येह लोग वोही थे जो मुसल्सल 21 बरस सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन रहे थे, सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबा व सह़ाबियात عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बहुत ज़ियादा सताया था, **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को हिजरत कर जाने पर मजबूर कर दिया था, येह वोही ज़ालिम लोग थे जिन्हों ने इस्लाम व मुस्लिमीन को ख़त्म करने के लिये ईमान वालों पर ह़म्ले किये और कई लड़ाइयां लड़ चुके थे और आज येह लोग सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से अपनी क़िस्मत का फ़ैसला सुनने के लिये सर झुकाए ह़ाज़िर थे। **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों से फ़रमाया : "तुम्हारा क्या ख़याल है ! मैं तुम से कैसा सुलूक करने वाला हूं !" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "अच्छा सुलूक फ़रमाएंगे।" रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं वोह कहूंगा जो यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) ने कहा था :

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾

(پ۱۳، یوسف:۹۲)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : आज तुम पर कोई मलामत नहीं, **अल्लाह** तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेह्रबानों से बढ़ कर मेह्रबान है।

(السنن الکبری للبیهقی ج۹ ص۱۹۹ حدیث۱۸۲۷۵ ملخّصاً)

ख़ार बिछाने वालों को भी फूलों का इन्आ़म दिया

आप ने ख़ून के प्यासों को भी राह़त का पैग़ाम दिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ علٰی محمَّد

﴾2﴿ मारने वाले को मुआ़फ़ कर दिया

करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा और मश्हूर आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه पर मदीने शरीफ़ का गवर्नर जा'फ़र बिन सुलैमान नाराज़ हुवा और **बत़ौरे सज़ा** ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को कोड़े लगाए गए (जब जब कोड़ा लगता आप की ज़बाने पाक से येह दुआ़ निकलती : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْن या'नी : **या अल्लाह** पाक ! इन लोगों को मुआ़फ़ फ़रमा दे कि येह ह़क़ीक़त से बे ख़बर हैं।[1]) यहां तक कि आप बेहोश हो गए। लोग इसी ह़ालत में आप को घर लाए, होश में आते ही आप ने फ़रमाया : **“लोगो ! गवाह रहो कि मैं ने अपने मारने वाले को मुआ़फ़ कर दिया।”** (الشفا بتعریف حقوق المصطفٰی ج۲ ص۵۱) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

सलाम उन पर बराए नफ़्स जो बदला न लेते थे

सलाम उन पर जो दुश्मन को दुआ़ए ख़ैर देते थे

मुआ़फ़ी के मुतअ़ल्लिक़ इर्शादे इलाही

अ़फ़्वो दर गुज़र के मुतअ़ल्लिक़ पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** की आयत 199 में इर्शाद होता है :

(۱): تَرتِیبُ المَدارِك للقاضی عِیاض ج۱ ص۱۲۵۔

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ ह़बीब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه कहते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) उस का ह़िसाब बहुत आसान त़रीक़े से लेगा और उस को अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह बातें कौन सी हैं ? फ़रमाया : ﴿1﴾ जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से मिलाप करो (या'नी तअ़ल्लुक़ जोड़ो) ﴿2﴾ जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़त़ा करो और ﴿3﴾ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो। (معجم اَوسَط ج۱ ص۲۶۳ حدیث ۹۰۹)

बहादुरी

ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद मुक़री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अपने दुश्मन से अच्छा सुलूक करना, ना पसन्दीदा शख़्स पर माल ख़र्च करना और जो शख़्स दिल को अच्छा न लगे उस से अच्छे तअ़ल्लुक़ात रखना बहादुरी है।" (طبقات الصوفیه للسلمی ص ۳۷۸)

अल्लाह करीम सुल्ह़ करवाएगा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे दो उम्मती **अल्लाह** पाक की बारगाह में दो ज़ानू गिर पड़ेंगे, एक अ़र्ज़ करेगा : "**या अल्लाह** पाक !

इस से मेरा इन्साफ़ दिला कि इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया था।" **अल्लाह** पाक मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाले) से फ़रमाएगा : अब येह (या'नी जिस पर दा'वा किया गया है वोह) क्या करे, इस के पास तो कोई नेकी बाक़ी नहीं। मज़्लूम (मुद्दई) अ़र्ज़ करेगा : मेरे गुनाह इस के ज़िम्मे डाल दे। इतना इर्शाद फ़रमा कर रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े। फ़रमाया : वोह दिन बहुत अ़ज़ीम दिन होगा, क्यूं कि उस वक़्त (या'नी बरोज़े क़ियामत) हर एक इस बात का ज़रूरत मन्द होगा कि उस का बोझ हलका हो। **अल्लाह** पाक मज़्लूम (या'नी मुद्दई) से फ़रमाएगा : देख तेरे सामने क्या है ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब ! मैं अपने सामने सोने के शह्र और मह़ल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं, येह किस नबी या सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : येह उस के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा करे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : इन की क़ीमत कौन अदा कर सकता है ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : तू अदा कर सकता है। वोह अ़र्ज़ करेगा : वोह किस त़रह़ ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : इस त़रह़ कि तू अपने भाई के हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : **या अल्लाह** पाक ! मैं ने हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये। **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : अपने भाई का हाथ पकड़ो और दोनों इकठ्ठे जन्नत में चले जाओ। फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से डरो और मख़्लूक़ में सुल्ह़ करवाओ क्यूं कि **अल्लाह** पाक भी क़ियामत के दिन मुसल्मानों में सुल्ह़ करवाएगा।

(اَلْمُستَدرَك ج ٥ ص ٧٩٥ حديث ٨٧٥٨)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बयान की गई ह़दीसे पाक मुसल्मानों के दरमियान सुल्ह़ (PEACE) करवाने की सुन्नते इलाही और सुल्ह़ की तरग़ीब

दिलाने की सुन्नते नबविय्या की ख़ुश्बूओं से महक रही है। **अल्लाह** करीम आपस में सुल्ह़ सफ़ाई करवाने की तरग़ीब दिलाते हुए पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** की दसवीं आयते करीमा में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۱۰

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : सिर्फ़ मुसल्मान भाई भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करा दो और **अल्लाह** से डरो ताकि तुम पर रह़मत हो।

सुल्ह़ करवाना सुन्नत है

हुक्मे क़ुरआनी के साथ साथ **अल्लाह** पाक के सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत भी हमें सुल्ह़ करवाने का अ़मली नमूना अ़त़ा फ़रमा रही है। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 949 पर लिखते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (सुवारी के जानवर) दराज़ गोश पर कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अन्सार के पास से गुज़र हुवा, वहां कुछ देर तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया (या'नी ठहरे), इस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय ने नाक बन्द कर ली। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो तशरीफ़ ले गए। उन दोनों की बात बढ़ गई और दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथापाई तक नौबत पहुंची। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और दोनों में सुल्ह़ करवा दी। इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई :

وَ اِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَا ۚ (پ۲۶، الحجرات:۹)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर मुसल्मानों के दो गुरौह आपस में लड़ पड़ें तो तुम उन में सुल्ह करा दो।

(خزائن العرفان ص۹۴۹، تفسیرِ کشاف ج٤ ص٣٦٤)

एक और मक़ाम पर सुल्ह की तरग़ीब दिलाते हुए पारह 5 **सूरतुन्निसाअ** की आयत 128 में इर्शाद होता है :

وَ الصُّلْحُ خَیْرٌ ؕ وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और सुल्ह बेहतर है और दिल को लालच के क़रीब कर दिया गया है।

सुल्ह करवाने के लिये तशरीफ़ ले गए

बुख़ारी शरीफ़ में है : सहाबिये रसूल ह़ज़रते सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं : कुबा में बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के लोगों में कुछ झगड़ा हो गया था तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने कुछ सह़ाबा के साथ उन के दरमियान सुल्ह करवाने के लिये तशरीफ़ ले गए। (بخاری ج۱ ص۴۱۰ حدیث ۱۲۱۸)

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सुल्ह करवाई

इन आयाते मुबारका पर अ़मल और सुल्ह करवाने की सुन्नत के ख़ुशनुमा रंग से हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِین की मुबारक सीरत ख़ूब रंगी हुई है। येह मुबारक ह़ज़रात मुसल्मानों में सुल्ह व अम्न के **फूल** खिलाने के

लिये बड़ी से बड़ी क़ुरबानी देने के लिये तय्यार रहते। चुनान्चे इस की एक रोशन मिसाल, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه हैं कि जिन के बारे में हमारे रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद फ़रमा दिया था : "मेरा येह बेटा सय्यिद (या'नी सरदार) है और **अल्लाह** पाक इस के ज़रीए मुसल्मानों के दो गुरौहों (या'नी दो ग्रूप्स) में सुल्ह़ करवाएगा।" (بُخاری ج۲ص۵۰۹ حدیث ۳۶۲۹)

चुनान्चे आप رَضِیَ اللهُ عَنْه अपने वालिदे माजिद मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه की शहादत के बा'द **6 माह** और चन्द दिन मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे और फिर मुसल्मानों के दो गुरौहों (या'नी दो ग्रूप्स) में सुल्ह़ करवाने के लिये ख़िलाफ़त जैसे अ़ज़ीम मन्सब से ख़ुद ही फ़राग़त ह़ासिल फ़रमाई।

नफ़्ल नमाज़ व ख़ैरात से अफ़्ज़ल काम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इस्लाह़ बैनन्नास (या'नी लोगों के दरमियान सुल्ह़ करवाओ) के मुत़ाबिक़ अ़मल करना एक इन्तिहाई अ़ज़ीम काम है। चुनान्चे ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللهُ عَنْه कहते हैं कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें रोज़े, सदक़ा और नमाज़ से अफ़्ज़ल काम की ख़बर न दूं ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं। फ़रमाया : वोह काम आपस में सुल्ह़ करवा देना है। और आपस के मुआ़मले का बिगाड़ मूंडने वाला (काम) है। (ترمذی ج٤ص٢٢٨حدیث ٢٥١٧)

शर्हे हदीस : मिरआत में है : यहां नफ़्ली रोज़े, नफ़्ली सदक़ा (और) नफ़्ली नमाज़ मुराद है न कि फ़राइज़। और इस हिस्से : "और आपस के मुआ़मले का बिगाड़ मूंडने वाला (काम) है" की वज़ाहत में फ़रमाते हैं : या'नी मुसल्मानों के आपस के तअ़ल्लुक़ात ख़राब कर देना, उन में दुश्मनी डाल देना, भलाइयों, सवाबों को फ़ना (या'नी ख़त्म) कर देने वाली चीज़ है, इस की नुहूसत से इन्सान रोज़ा, नमाज़ की लज़्ज़त बल्कि ख़ुद रोज़े, नमाज़ वग़ैरा दीगर इबादात से महरूम हो जाता है। (मिरआत, जि. 6, स. 614 से ख़ुलासा)

हर लफ़्ज़ के बदले सवाब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स दो आदमियों के दरमियान सुल्ह़ कराए, **अल्लाह** पाक उस के मुआ़मलात दुरुस्त कर देता है और उसे हर लफ़्ज़ के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और वोह यूं वापस आता है कि उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो चुके होते हैं।

(الترغیب والترھیب للاصبھانی ج۱ص۱۵۵حدیث ۱۸۶)

अच्छा इस्लामी भाई कौन ?

देखा आप ने ! लोगों में सुल्ह़ करवा देना कैसा फ़ज़ीलतो अ़ज़मत वाला काम है। तो वोह कितना अच्छा और भला इन्सान है जो अपने छोटों पर शफ़्क़त करता और अपने बड़ों की इ़ज़्ज़त करता, और हर किसी की भलाई चाहता और सब की ख़ैर ख़्वाही करते हुए अपने पाकीज़ा किरदार व नेक गुफ़्तार (या'नी अच्छी गुफ़्तगू) से मुसल्मानों की आपसी नाराज़ियां दूर करवाने और उन में सुल्ह़ करवाने के लिये हमेशा कोशिश करता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

''सुल्ह़ में ख़ैर ही ख़ैर है'' के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 16 निय्यतें

दो मदनी फूल : **(1)** आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है **(2)** जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा। प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप ने येह रिसाला ''**नाराज़ियों का इलाज**'' पूरा पढ़ लिया है तो ग़ालिबन दिल ने चोट खाई होगी, हिम्मत कीजिये और **अल्लाह** पाक की रिज़ा की ख़ातिर नीचे लिखी हुई 16 निय्यतें कर लीजिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ। या'नी ''मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।'' (مُعْجَم كبير ج٦ ص١٨٥ حديث٥٩٤٢) (1) अपने नाराज़ इस्लामी भाइयों और (2) रूठे हुए रिश्तेदारों से ख़ुद आगे बढ़ कर रिज़ाए इलाही के लिये सुल्ह़ कर लूंगा (3) पिछली ख़ताओं पर किसी को शरमिन्दा नहीं करूंगा (4) सुनी सुनाई बातों में आ कर किसी से तअ़ल्लुक़ात ख़राब नहीं कर लूंगा (5) बद गुमानियों (6) ऐ़ब दरियों (7) दिल आज़ारियों (8) ग़ीबतों (9) चुग़्लियों (10) इल्ज़ाम तराशियों और शमातत (या'नी किसी के नुक़्सान पर ख़ुश होने) से बचता रहूंगा (11) ग़ीबत व चुग़ली सुनने से भी बचूंगा (12) जहां तक हो सका इस्लामी भाइयों में सुल्ह़ करवाने की कोशिश करूंगा (13) जिस जिस ने मेरी दिल आज़ारी की उस को **अल्लाह** करीम की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ करता हूं (14) जो कोई आइन्दा मेरा दिल दुखाए उस को भी अपना ह़क़ पेशगी मुआ़फ़ करता हूं (याद

रहे ! पेशगी मुआ़फ़ कर देने वाले मुसल्मान की बिला इजाज़ते शर्र्इ दिल आज़ारी करने वाला ख़ुदाए ज़ुल जलाल की ना फ़रमानी के वबाल में बहर ह़ाल गिरिफ़्तार होगा) (15) जो मेरे साथ बुराई करेगा हुक्मे क़ुरआनी की इत़ाअ़त करते हुए उस के साथ भलाई करने की कोशिश करूंगा (16) येह रिसाला (नाराज़ियों का इ़लाज) कम अज़ कम 12 अ़दद तक़्सीम करूंगा (ख़ुसूसन अपने रिश्तेदारों और उन मुसल्मानों तक पहुंचाइये जिन की आपस में नाराज़ियां हों)

या अल्लाह पाक ! हम सब को प्यार मह़ब्बत के साथ रहने और शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए नाराज़ मुसल्मानों में सुल्ह़ सफ़ाई करवाने का सवाब कमाते रहने की सआ़दत नसीब फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या ईलाही !

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

25 ज़ी क़ा'दह शरीफ़ 1444 सि.हि.
15-06-2023

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बद दुआ़ देना इन्तिक़ाम है	12
इमामे ह़सन व इमामे हुसैन की सुल्ह़ का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़	1	झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत	12
जन्नत की त़रफ़ पहल करने का नुस्ख़ा	2	मुसल्मान किसे कहते हैं ?	12
शैत़ान आपस में लड़वाता है	3	ईज़ाए मुस्लिम	13
सब सुल्ह़ो सफ़ाई के साथ रहें	4	बुरा चरचा करना बाइ़से अ़ज़ाब है	14
ग़ुस्सा फ़साद की जड़ है	4	फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत	16
ग़ुस्से की ता'रीफ़	4	दुश्मन को दोस्त बनाने का क़ुरआनी नुस्ख़ा	16
जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा	5	ह़ुस्ने सुलूक का नतीजा	17
मालिक बिन दीनार के ग़ुस्सा पी जाने की बरकत (वाक़िआ़)	5	बुराई को भलाई से टालने की दो मिसालें	18
ग़ुस्से से बुज़ो कीना पैदा होता है	6	(1) आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान	18
कीने की ता'रीफ़	6	(2) मारने वाले को मुआ़फ़ कर दिया	19
मग़्फ़िरत में रुकावट	7	मुआ़फ़ी के मुतअ़ल्लिक़ इर्शादे इलाही	19
अ़दावत रखने वाले की शामत	7	जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े	20
बिला वज्हे शरई क़त्ए तअ़ल्लुक़ गुनाह है	7	बहादुरी	20
तीन क़िस्म के अफ़राद	8	**अल्लाह** करीम सुल्ह़ करवाएगा	20
ऐ़ब छुपाने की फ़ज़ीलत	8	सुल्ह़ करवाना सुन्नत है	22
ऐ़ब की वज़ाह़त !	9	सुल्ह़ करवाने के लिये तशरीफ़ ले गए	23
मुसल्मान कैसा होना चाहिये ?	10	इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه ने सुल्ह़ करवाई	23
ऐ़ब छुपाओ, जन्नत पाओ	10	नफ़्ल नमाज़ व ख़ैरात से अफ़्ज़ल काम	24
जब लड़ाई ठन जाती है	11	हर लफ़्ज़ के बदले सवाब	25
ग़ीबत का अ़ज़ाब	11	अच्छा इस्लामी भाई कौन ?	25
ग़ीबत की ता'रीफ़	11	16 निय्यतें	26
तोहमत का अ़ज़ाब	11	मआख़िज़ो मराजेअ़	29

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मआख़िज़ो मराजेअ़

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن کریم		الترغیب والترہیب	دارالحدیث قاہرۃ
تفسیر وسیط	دارالمصور عربی مصر	جامع صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر کشاف	مکتب الاعلام الاسلامی ایران	اشعۃ اللمعات	
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ	مراٰۃ المناجیح	
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ تہران
مسلم	دارالکتاب العربی بیروت	الشفا	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	طبقات الصوفیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	تاریخ قزوین	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	ترتیب المدارک	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حدیقہ ندیہ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسند ابویعلٰی	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ذخائر العقبٰی	مکتبۃ الصحابۃ جدۃ
مسند عبد بن حمید	عالم الکتب بیروت	المفردات	دارالقلم دمشق
معجم اوسط	دارالفکر بیروت	فتاوٰی رضویہ	
سنن کبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت	حیات اعلٰی حضرت	مکتبۃ المدینہ
الزہد لابن المبارک	دارالکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या मदनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن۔

ग़ुर्बत पर सब्र का इन्आ़म

ह़ज़रते ह़सन बिन ह़बीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ (वफ़ात: 197 हिजरी) को किसी ने वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : غَفَرَلِیْ بِصَبْرِیْ عَلَی الْفَقْرِ فِی الدُّنْیَا या'नी मुझे दुन्या में फ़क़्र (या'नी तंगदस्ती) पर सब्र की वज्ह से बख़्श दिया।

(الصبر والثواب علیه لابن ابی الدنیا، قول نمبر92)